चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना

WOMEN'S CONSCIOUSNESS IN THE ~~NARRATIVE LITERATURE~~ OF CHITRA MUDGAL

हिन्दी विभाग
(कला संकाय)
में
पी–एच. डी. उपाधि हेतु
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को प्रस्तुत
प्रस्तावित शोधकार्य की रूप रेखा

शोध निर्देशक :
डॉ. राजेश कुमार शर्मा
वरिष्ठ व्याख्याता : हिन्दी विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

शोधार्थी :
~~सुश्री~~ भारती

हिन्दी विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
वर्ष – 2015

परिशिष्ट –IV
प्रस्तुत शोध – कार्य का प्रारूप

1.	शोधार्थी का नाम (हिन्दी में)	:	सुश्री भारती
	In English	:	MISS BHARTI
2.	अनुसंधान का विषय	:	**चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना**
		:	**WOMEN(S) CONSCIOUSNESS IN THE ~~NARRATIVE LITERATURE~~ FICTION OF CHITRA MUDGAL**
3.	शोध कार्य का स्थल	:	
	(क) संस्था / विभाग जहाँ कार्य किया जा रहा है।	:	हिन्दी विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
	(ख)अनुसंधान की भौगोलिक स्थिति (यदि हो)	:	लागू नहीं
4.	प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय, महत्ता एवं उद्देश्य	:	संलग्न 1
5.	प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किये गये कार्यो की समीक्षा	:	संलग्न 2
6.	प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध सम्बन्धी रिक्तता	:	संलग्न 3
7.	मुख्य प्राक्कल्पना (यदि हो)	:	संलग्न 4
8.	सामग्री और विधि / शोध पद्धति	:	संलग्न 5
9.	प्रस्तावित शोध विषय का अध्यायवत् विवरण	:	संलग्न 6
10.	संदर्भ – ग्रन्थ सूची	:	संलग्न 7

संक्षिप्त रूप रेखा का अनुमोदन

11-5-15   11-5-15

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर दिनांक सहित   अभ्यर्थी के हस्ताक्षर दिनांक सहित

व्याख्याता : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

4. प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय, महत्ता एवं उद्देश्य संलग्न 1

प्रस्तावित शोध कार्य 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना' विषय पर आधारित है। यह विषय सामान्य दृष्टि से नहीं, अपितु साहित्य के अध्येताओं एवं विद्यार्थियों की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

हिन्दी के आरम्भिक उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री चेतना के बीज पाए जाते है। प्रथम गघ रचना देवरानी जेठानी की कहानी , वामा शिक्षक, भाग्यवती, सुन्दर शिक्षक और परीक्षा गुरू आदि में स्त्री चेतना ही निहित है। जैसे–जैसे समाज में नारी की स्थिति में बदलाव आया है , वह अपने अधिकारों के प्रति सजग व सचेत हुई। स्त्री अपनी गुलाम मानसिकता वाली छवि, सती–साध्वी या पति परमेश्वरी को तोड़कर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाना चाहती है। आधुनिकता और बौद्धिकता के कारण वह अपने निज स्वरूप और अपनी भावनाओं एवं इच्छाओं के प्रति सचेत हुई है।

महादेवी वर्मा के अनुसार – ''हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी पर प्रभुत्व, केवल अपना वह स्थान, वह स्वत्व, जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी। (शृंखला की कड़ियाँ – अपनी बात से)

इसी दौरान हिन्दी साहित्य में नारी जागृति की आवाज व्यापक धरातल पर उठने लगी। हिन्दी कथाकारों के रूप में लेखिकाओं की बढ़ती तादाद ने अनायास नारी मुद्दों के स्तर को बदल दिया। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आठवें दशक में **चित्रा मुदगल** ने कथा लेखन में अपना योगदान देना शुरू किया। अपने कथा साहित्य में स्त्री चेतना व नारी जागृति को एक नई दिशा प्रदान की। यही कारण है कि चित्रा मुद्गल की रचनाओं में स्त्री चेतना विषय पर कार्य करने हेतु मेरे मन का रूझान बढ़ा।

महत्ता :— चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना बहुत ही विचारोत्तेजक है। चित्रा मुद्गल विचार, दृष्टिकोण और रचना तीनों स्तरों पर चेतनावादी कथा सर्जना की महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर है।

इन्होंने अपने कथा—साहित्य स्त्री चेतना व नारी मुक्ति को भरपूर स्थान दिया। इनके कथा साहित्य में स्त्री स्वतन्त्रता व समाधिकारों की आकांक्षा से युक्त है, मुक्ति के लिए छटपटाती हुई वह अपने विशिष्ट व्यक्तित्व की पहचान के लिए निरन्तर संघर्ष कर रही है और अपनी अस्मिता एवं पारिवारिक— सामाजिक सम्बन्धों के प्रति समाज से एक नई दृष्टि पैदा करने की संवदेनशीलता का आग्रह करती है।

लेखिका ने साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे— उपन्यास, कहानी, लेख, कविताएँ, बाल साहित्य सम्पादित ग्रन्थ आदि में अपनी लेखनी चलाई है और उस दौर के साहित्य के स्त्री चेतना सम्बन्धी मुद्दों के कारण साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। **'लपटें'** की कहानियों में एक ओर जहाँ मध्यवर्गीय नारी अपने अस्तित्व और स्वाभिमान की रक्षा के लिए पुरूष—प्रधान समाज द्वारा किए अवमूल्यन से टकरा रही है, वहीं चारों ओर फैले अन्याय, शोषण अत्याचार, अमानवीयता आदि का खुला प्रतिपाद कर रही है।

उनके रचनात्मक लेखन के बारे में कहा जाता है कि समकालीन यथार्थ का वह जिस अद्भुत भाषिक के साथ अपनी कथा—कृतियों में परत—दर—परत अनेक अर्थ छवियों में अन्वेषित करती है, वह चकित कर देने वाला है। **'लकड़बग्घा'** (कथा संग्रह) ऐसी ही कहानी है जिसमें भाषिक संवेदना के साथ—साथ नारी अस्मिता एवं आम लोगों का दुःख—दर्द छिपा है।

चित्रा मुद्गल की कृति **'तहखानों में बन्द अक्स'** स्त्री—विमर्श के बने बनाए फ्रेम से एकदम अलग पठनीय कृति है। उनकी दृष्टि में स्त्री आज अपने लिए एक सम्मानजनक जगह चाहती है, रियायत नहीं।

'एक जमीन अपनी' (उपन्यास) विज्ञापन की उस दुनिया की कहानी है जहाँ समाज की इच्छाओं को पैना करने के औजार तैयार किए जाते है और स्त्री के उस संघर्ष की

भी जो इस दुनिया में अपनी रचनात्मक क्षमता की पहचान अर्जित करने और सिर्फ देह--भर न रहने के लिए करती है। अतः उनकी स्त्री मूक नहीं, मुखरा एवं प्रगल्भा है, जो समाज की गली--सड़ी मान्यताओं व धारणाओं का विद्रोह करके समाज में अपनी निजी अस्मिता व पहचान स्थापित करना चाहती है।

इसी तथ्य को दृष्टिगत करते हुए 'चित्रा मुद्‌गल के कथा-साहित्य में स्त्री चेतना' मेरे शोध का विषय है।

मुख्य उद्देश्य :–

1. स्त्री चेतना का अर्थ, स्वरूप व परिभाषा को स्पष्ट करते हुए स्त्री चेतना के विभिन्न रूपों को अभिव्यक्त करना मेरा उद्देश्य है।
2. हिन्दी साहित्य में चित्रा मुद्गल के पूर्ववर्ती साहित्यकारों के कथा साहित्य में स्त्री चेतना का विश्लेषण करना।
3. कथा साहित्य में वर्णित स्त्री चेतना के विभिन्न रूपों के क्रमिक विकास को व्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत करना मेरे शोध का ध्येय है।
4. चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य का मुख्य स्वर नारी–मुक्ति है। यातना चाहे नारी की हो या सर्वहारा की, किसी वृद्ध की हो या बच्चे की, चित्रा मुद्गल उसके उत्स तक जाने की कोशिश करती है। यही वजह है कि उनके कथा साहित्य में व्यवस्था का क्रूर, अमानवीय जन–विरोधी चरित्र बार–बार उभरता है। आशा है मेरा यह शोध कार्य चित्रा मुद्गल की नारी–मुक्ति व उसकी अस्मिता के प्रति विवेकपूर्ण दृष्टिकोण को उनके कथा साहित्य मे प्रतिफलित रूप से दिखाने में समर्थ हो पाएगा।
5. मेरा यह शोध कार्य चित्रा मुद्गल के जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त करने का प्रयास होगा।
6. समकालीन हिन्दी उपन्यास व कहानी लेखिकाओं के कथा–साहित्य के क्षेत्र में योगदान प्रस्तुत कर उसमें चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में योगदान एवं उसकी महत्ता को उजागर करना मेरा ध्येय है।
7. मेरे शोध का विषय अन्य शोधार्थियों के लिए उपयोगी होगा। ऐसा मेरा मत है। इस कसौटी पर अपने शोध को खरा उतारने का मैं भरपूर प्रयास करूँगी ।

5. प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किए गए कार्यो की समीक्षा   संलग्न 2

'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना' मेरे शोध का विषय है।

चित्रा मुद्गल के शब्दों में ''नारी चेतना की मुहिम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आन्दोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ और अन्य मनुष्यों की तरह समाज में सम्मानपूर्वक रहने की अधिकारी हूँ।''

चित्रा मुद्गल ने स्त्री को स्त्री की नजर से देखकर उसके निजी मन के कोनों को खोला, परिणामस्वरूप नैतिकता की परम्परागत अवधारणा चरमराने लगी और स्त्री–पुरूष सम्बन्धों से लेकर स्त्री की अस्मिता के विविध आयामों की पड़ताल तीव्रतर होने लगी और उन्होंने अपने ढ़ग से स्त्री जीवन की विविध समस्याओं को अपनी कलाकृतियों में उकेरा।

वस्तुतः सच्चाई और ईमानदारी से देखा जाए तो चित्रा मुद्गल की रचनाओं पर अन्यान्य दृष्टिकाणों से विचार–विमर्श हुआ है, किन्तु उनके साहित्य में स्त्री चेतना को लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में अनिता कुमारी ने 'चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में युग चेतना' विषय पर कार्य किया है।

स्त्री चेतना को लेकर बहुत–सी पुस्तकें हमारे सामने आती है, परन्तु उनमें स्त्री, चेतना का समग्र रूप ~~प्रतिबन्धित~~ प्रतिबिम्बित नहीं हुआ है। मेरी दृष्टि में 'चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में स्त्री चेतना' विषय उनके साहित्य के मूल्यांकन की दिशा में एक नवीन आयाम को उजागर करता है एवं नए शोध की माँग करता है। अतः मैं इस विषय पर शोध कार्य करने हेतु आपकी सहमति चाहती हूँ।

6. प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध सम्बन्धी रिक्तता

संलग्न 3

'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना मेरे शोध का विषय है। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस विषय पर शोधकार्य नहीं हुआ है। अतः यह विषय अछूता व मौलिक है।

मेरे शोध का उद्देश्य चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में अन्तर्निहित स्त्री चेतना को व्यक्त करना होगा। देश–विदेश में अपनी वैचारिक प्रति–बद्धता, सरोकारों और नारी–अस्मिता के लिए समर्पित लेखन के लिए सुपरिचित वरिष्ठ कथाकार–विचारक चित्रा मुद्गल को समाज–सेवा से मिले व्यापक अनुभवों ने 'झुग्गी–झोंपड़ियों मे प्रेम' को देखने की आत्मीय दृष्टि प्रदान की है, तो वह दूसरी औरत को भी समाज से बेगैरत नहीं मानती। सामाजिक समता का राग अलापने वाले समाज से वह आखँ में आखँ डालकर जो प्रश्न करती है, उससे हमारा ढोंगी समाज बेनकाब हो जाता है। उनकी नजर समाज के हर वर्ग पर रहती है और उन दबावों पर भी जो आज युवतियों पर पड़ रहे हैं। वह उन्हें भयमुक्त करते हुए सहज जीवन की राह दिखाती है।

अतः आठवें दशक की बहुचर्चित कथाकार चित्रा मुद्गल के लेखन से प्रभावित होकर तथा पूर्व में उपलब्ध शोध ग्रन्थों के विषय सम्बन्धी रिक्तता होने के कारण 'चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में स्त्री चेतना' के विषय नवीन समीक्षात्मक शोध की आवश्यकता को उजागर करता है

चित्रा मुद्गल के साहित्य में स्त्री चेतना ने अपनी उपस्थिति पूरी गहराई और शिद्दत से दर्ज करवाई है। उन्होंने इस बात का भी पूरा ध्यान रखा है कि वे सवाल अछूते न रह जाएँ, जो इस समय की संघर्ष –भूमि में नारी–स्वातन्त्र्य को लेकर उठते है, उठ सकते है। इस तरह के विचारों ने सहज ही हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, इसलिए ''चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में स्त्री चेतना'' को ही मैंने अपने शोध का विषय बनाया। मुझे आशा है कि 'चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में स्त्री चेतना' पर लिखा जाने वाला यह शोध ग्रन्थ इस रिक्तता को पूर्ण करेगा तथा उनके साहित्य के मूल्यांकन की दिशा में नवीन आयाम स्थापित करेगा।

7. मुख्य प्राक्कल्पना

संलग्न 4

'चेतना' शब्द चेतन से निर्मित है। चेतन का अर्थ है 'आत्मा, जीव प्राणयुक्त'। चेतना वह गुण है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करती है। अन्य प्राणी में नैसर्गिक प्रवृत्ति (भूख, नींद, काम) होती है। मनुष्य को छोड़कर अन्य प्राणी अपने बाह्य वातावरण के प्रति जागरूक नहीं होते। केवल स्वयं के प्रति जागरूक रहते है, किन्तु मनुष्य खुद के प्रति जागरूक रहते है और मनुष्य खुद के प्रति जागरूक रहते हुए बाह्य परिवेश के प्रति भी जागरूक होता है। चेतना अतिक्रमण का काम करती है। जो कुछ मिला है, उससे आगे आपको ले जाने का कार्य करती है।

चेतना मानव में उपस्थित वह तत्त्व है, जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूति होती है। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विषयों पर चिन्तन करते है। इसी के कारण हमें सुख–दुख की अनुभूति होती है और हम इसी के कारण अनेक प्रकार के निश्चय करते है तथा उन पदार्थों की प्राप्ति की चेष्टा करते है।

~~स्त्री~~ चेतना की इस अवधारणा के अनुरूप स्त्री-चेतना के विविध रूप — स्वत्व, अस्मिता, करुणा, मातृत्व

~~कामायनी~~ -प्रसाद कृत कामायनी में कहा गया है -

दया, माया, ममता लो आज
मधुरिमा लो अगाध विश्वास

8. शोध पद्धति

संलग्न 5

1. प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रथम अध्याय में आगमन पद्धति अपनाते हुए स्त्री चेतना की अवधारणा उसके स्वरूप को परिभाषित व व्याख्यायित किया जाएगा।
2. द्वितीय अध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित होने से इस अध्याय में सर्वेक्षण प्रणाली को अपनाते हुए तथ्य सामग्री संकलित की जाएगी। चित्रा मुद्गल के उपन्यास व कहानियाँ एवं उन पर लिखी गई आलोचनात्मक पुस्तकों को क्रय करके एवं पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त करके शोध आधार बनाया जाएगा।
3. तृतीय अध्याय में आगमन शैली को आधार बनाते हुए हिन्दी लेखिकाओं में स्त्री चेतना की अवधारणा एवं योगदान को स्पष्ट किया जायेगा तथा स्त्री चेतना सम्बन्धी विभिन्न विद्वानों के अभिमतों को प्रस्तुत करते हुए स्त्री चेतना के समर्थक विद्वतगणों एवं इस मत से असहमत या विरोधियों की अवधारणा को प्रस्तुत एवं विश्लेषित किया जायेगा।
4. चतुर्थ, पंचम तथा षष्ठ अध्याय में आवश्यकता अनुरूप आगमन एवं निगमन पद्धति अपनाई जायेगी। इन पद्धतियों से कथ्य, शिल्प, महत्त्व, मूल्यों, सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि को विश्लेषित किया जायेगा। निगमन प्रणाली के अवलम्बन से विविध उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए अपनी बात को प्रमाणित करने का प्रयास होगा। इस प्रकार यह प्रमाणित रूप से मेरे शोध को व्यवस्थित रूप देगी और साथ ही उसे सार्थक एवं उपयोगी भी बनायेगी।

चित्रा जी के कथा साहित्य के आधार पर उनकी रचनाधार्मिता व जीवन दर्शन को साहित्य जगत से जुड़े शोधार्थियों एवं प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना मेरे शोध का उद्देश्य है। इस प्रकार आवश्यकता अनुरूप विभिन्न पद्धतियों का आश्रय लेते हुए मैं अपने इस प्रस्तावित शोध कार्य का पूर्णता प्रदान करने का सार्थक एवं भरसक प्रयास करूँगी।

9. प्रस्तावित शोध विषय का अध्यायवत् विवरण संलग्न 6

विषयानुक्रमणिका

विषय – 'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री–चेतना'

अध्ययन तथा विश्लेषण की सुविधा के लिए प्रस्तावित शोध कार्य को सात अध्यायों में बाँटा गया हैं।

प्रथम अध्याय – 'स्त्री चेतना' : अर्थ, स्वरूप एवं अवधारणा — 1 — 67

1. चेतना का अर्थ एवं स्वरूप
2. स्त्री चेतना का अर्थ, स्वरूप एवं विकास के विविध आयाम
3. वैश्विक सन्दर्भ में स्त्री चेतना के विकास के विविध सोपान
4. भारतीय सन्दर्भ में स्त्री चेतना के विकास के विविध सोपान
5. स्वातन्त्र्योत्तर भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन
6. हिन्दी कथा–साहित्य में स्त्री चेतना का परिचयात्मक अध्ययन

समाकलन

द्वितीय

~~द्वित्तीय~~ अध्याय – चित्रा मुद्गल : व्यष्टि और सृष्टि 68 — 103

(अ) चित्रा मुद्गल : जीवन परिचय

1. जन्म शिक्षा
2. परिवार व परिवेश
3. विवाह
4. पुरस्कार

(ब) व्यक्तित्व

(स) रचना सृष्टि

1. चित्रा मुद्गल एवं उनके उपन्यास
2. चित्रा मुद्गल एवं उनके कहानी संग्रह
3. चित्रा मुद्गल की रचनाधर्मिता

समाकलन

तृतीय अध्याय – हिन्दी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री चेतना

1. स्त्रीवादी लेखिकाओं की अवधारणाएँ
2. चित्रा मुद्गल की स्त्री विषयक दृष्टि
3. समकालीन महिला कथा लेखन में चित्रा मुद्गल का स्थान

समाकलन

चतुर्थ अध्याय – चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना

सामाजिक सन्दर्भ

1. ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक सरोकार
2. शहरी क्षेत्र में सामाजिक सरोकार
3. परिवारिक ~~विघ्टन~~ विघटन
4. शिक्षित व अशिक्षित कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ
5. सामाजिक रूढ़ियाँ
6. दाम्पत्य सम्बन्ध व विवाहेतर सम्बन्ध
7. जीवन शैली में आया बदलाव
8. स्त्री जाति की विद्रोहधर्मिता
9. आधुनिक 'बोल्ड' स्त्री का रूप

समाकलन

पचंम अध्याय – 'स्त्री चेतना' के आर्थिक एवं सांस्कृतिक सरोकार

आर्थिक सरोकार :

1. ग्रामीण जीवन की अर्थव्यवस्था
2. शहरी जीवन की अर्थव्यवस्था
3. आर्थिक स्थिति में बदलाव
4. नौकरी पेशा स्त्री और अर्थव्यवस्था
5. आर्थिक स्वावलम्बन के कारण स्त्री की समाज में परिवर्तित भूमिका

सांस्कृतिक सरोकार

1. ग्रामीण स्त्री और सांस्कृतिक सरोकार
2. शहरी स्त्री और सांस्कृतिक सरोकार
3. सांस्कृतिक परिवर्तन : पश्चिमीकरण
4. जीवन मूल्यों में परिवर्तन (मूल्य सक्रंमण)
5. भूमण्डलीकरण के दौर में नारी की समस्याएँ

समाकलन

षष्ठ अध्याय – चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य का शिल्प–विधान और स्त्री चेतना

1. शिल्प और कथ्य का गहरा सामंजस्य
2. भाषिक संरचना
3. भाषिक प्रयोग

समाकलन

सप्तम अध्याय – उपसंहार

1. शोध निष्कर्षो का सार–समाहार

परिशिष्ट – चित्रा मुद्‌गल : साक्षात्कार

मूल एवं आधारभूत ग्रन्थ

(क) चित्रा मुद्गल के कहानी संग्रह

क्र.स.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	जहर ठहरा हुआ	अनन्य प्रकाशन	1980
2	लाक्षागृह	पराग प्रकाशन	1982
3	अपनी वापसी	सभांवना प्रकाशन	1982
4	इस हमाम में	प्रभात प्रकाशन	1986
5	ग्यारह लम्बी कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन	1987
6	जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे है	नेशनल पब्लिशिंग हाउस	1992
7	चर्चित कहानियाँ	सामयिक प्रकाशन	1994
8	मामला आगे बढ़ेगा अभी	प्रभात प्रकाशन	1995
9	जिनावर	किताबघर प्रकाशन	1996
10	लपटें	भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन	2002
11	केंचुल	प्रभात प्रकाशन	2001
12	भूख	प्रभात प्रकाशन	2001
13	बयान	भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन	2004

(ख) उपन्यास

क्र.स.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	एक जमीन अपनी	प्रभात प्रकाशन	1990
2	आवा	प्रभात प्रकाशन	1999
3	गिलिगडु	प्रभात प्रकाशन	2002

110002

(ग) बाल उपन्यास

क्र.स.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	माधवी कन्नगी	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	1993
2	मणि मेखलै	साहित्य प्रकाशन	2002
3	जीवक	साहित्य प्रकाशन	2002

(घ) लेख

क्र.स.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	तहखानों में बंद आइनों के अक्स	अभिनव प्रकाशन	1998
2	बयार उनकी मुट्ठी में	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	2004
3	पाटी	बोधि प्रकाशन	2011

(ङ.) सम्पादित ग्रन्थ

क्र.स.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	असफल दाम्पत्य की कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1987
2	टूटते परिवारों की कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन, 〃	1987
3	दूसरी औरत की कहानियाँ	प्रभात प्रकाशन, 〃	1988
4	भीगी हुई रेत	शिक्षा प्रकाशन	1989
5	पुरस्कृत कहानियाँ	सन्तोष प्रकाशन	1889

(च) कहानियाँ

क्र.स.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	जंगल का राज	प्रभात प्रकाशन	1980
2	देश–देश की लोक कथाएँ	प्रभात प्रकाशन	1986
3	नीति कथाएँ	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्	1987
4	सूझ–बूझ	प्रभात प्रकाशन	2003

सहायक सामग्री

आलोचनात्मक ग्रन्थ

क्र.स.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	स्त्रीः मुक्ति का सपना	अरविन्द जैन	वाणी प्रकाशन	2006
2	नारी चेतना के आयाम	अलका प्रकाश	लोक भारती प्रकाशन	2001
3	अन्या से अनन्या	प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन	2007
4	हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण	बिन्दु अग्रवाल	राधा कृष्ण प्रकाशन	1968
5	आठवें दशक की हिन्दी कहानी	मधु सिंह	राधा कृष्ण प्रकाशन	—
6	श्रृखंला की कडियाँ	महादेवी वर्मा	लोकभारती प्रकाशन	1977
7	द्वापर	मैथिलीगुप्त	साहित्य सदन झांसी सस्करण	2000
8	सृजन के सहयात्री	रविन्द्र कालिया	किताबघर	1998
9	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	राजकमल प्रकाशन	2001
10	हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला	डॉ0 रोहिणी अग्रवाल	दिनमान प्रकाशन	1993
11	स्त्री लेखनः स्वपन और संकल्प	डॉ0 रोहिणी अग्रवाल	राजकमल प्रकाशन	2011
12	स्त्री विमर्श	विनय कुमार पाठक	भावना प्रकाशन	2005
13	बीसवी सदी का हिन्दी साहित्य	डॉ0 विश्वनाथ तिवारी	भारतीय ज्ञानपीठ	2006
14	वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन	डॉ0 साधना अग्रवाल	वाणी प्रकाशन	1995
15	औरत की कहानी	सुधा अरोड़ा	भारतीय ज्ञानपीठ	2008
16	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	सुमन राजे	भारतीय ज्ञानपीठ	2003

17	प्रसाद साहित्य में युग चेतना	लीलावती देवी	चन्द्रलोक प्रकाशन	1996
18	स्त्री–चिन्तन की चुनौतियाँ	रेखा कस्तवार	राजकमल प्रकाशन	2006
19	स्त्री संघर्ष का इतिहास	राधा कुमार	वाणी प्रकाशन	2005
20	स्त्री–पुरूष कुछ पुनर्विचार	राजकिशोर	वाणी प्रकाशन	2006
21	दिनकर का सौन्दर्य	डॉ0 राजेश शर्मा	राजश्री प्रकाशन, मथुरा	2006
22	कामायनी में सौन्दर्य विधान	डॉ0 राजेश शर्मा	मीनाश्री प्रकाशन, अजमेर	1985
23	प्रेम के साथ पिटाई	लवलीन	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	–
24	तीन द्विज हिन्दू स्त्रीलिंगों का चिन्तन	डॉ. धर्मवीर भारती	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
25	मातृसत्ता, पितृसत्ता और जारसत्ता खण्ड–छड दूसरों की जूतियाँ खण्ड–सात	डॉ. धर्मवीर भारती	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
26	चमार की बेटी रूपा	डॉ. धर्मवार भारती	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
27	नारी चेतना के आयाम	अलका प्रकाश	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	2007
28	निर्मल वर्मा के स्त्री विमर्श	वदना केंगरानी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2007
29	स्त्री अस्मिता के प्रश्न	सुभाष सेतिया	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
30	औरतः अपने लिए	लता वर्मा	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
31	स्त्रीत्त्ववादी साहित्य विमर्श	जगदीश्वर चतुर्वेदी	अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली	2006
32	हिन्दी उपन्यास	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2006

33	मृदुला गर्ग और नारी अस्मिता का प्रश्न	डॉ. ज्योति सिंह	हिन्दी साहित्य निकेतन	2008
34	मृदुला गर्ग कृत अनित्य इतिहास और आख्यान का संबंध	डॉ. ज्योति सिंह	हिन्दी साहित्य निकेतन	2008
35	मृदुला गर्ग के उपन्यास में चित्रित नर नारी संबंध	डॉ. सत्या जैन	प्रसंग प्रकाशन	2010
36	कवियों की कहानियाँ एक मूल्यांकन	मृत्युंजय सिंह	अनुराग प्रकाशन, दिल्ली	2007
37	यशपाल का कहानी संसारः एक अंतरंग परिचय	सी. एम. मोहन्नम	लोकभारती, इलाहबाद	2007
38	पितृ सत्ता के नये रूप	राजेन्द्र यादव प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
39	हिन्दी उपन्यासः उद्भव और विकास	हेतु भारद्वाज व डॉ. सुमनलता	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	2006
40	नई कहानी की भूमिका	कमलेश्वर	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
41	हिन्दी उपन्यासः एक अन्तर्यात्रा	रामदरश मिश्र	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
42	नई कहानीः संदर्भ एवं प्रकृति	देवीशंकर अवस्थी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
43	उपन्यास की संरचना	गोपालराज	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
44	हिन्दी उपन्यास का इतिहास	गोपालराज	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
45	साठोत्तरी हिन्दी कहानी के प्रेम	डॉ. मंजु चतुर्वेदी	अंकुर प्रकाशन, उदयपुर	2006
46	स्त्री–पुरूषों के संबंधों का विमर्श	डॉ. उषा कीर्ति राणावत	अंकुर प्रकाशन, उदयपुर	2006
47	प्रेमचन्द्र कहानी का	डॉ.जाफर राजा	लोकभारती प्रकाशन,	2006

	रहनुमा		इलाहबाद	
48	गद्य के प्रतिमान	विश्वनाथ तिवाडी	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2006
49	हिन्दी कहानी की विकास प्रक्रिया	डॉ. आनन्द तिवाडी	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2006
50	कहानी नई कहानी	नामवर सिंह	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2006
51	हिन्दी गद्यः विन्यास और विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2006
52	परिधि पर स्त्री	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
53	स्त्रीः देह की राजनीति से देश की राजनीति तक	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
54	बंद गलियों के विरूद्ध	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
55	ओ उस्बीरी	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
56	जहाँ औरते गढ़ी जाती है	मृणाल पाण्डे	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
57	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
58	अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य	राजेन्द्र यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
59	औरतः उत्तर कथा	राजेन्द्र यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2006
60	आज की कहानी	विजय मोहन सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
61	उपन्यासों के रचना प्रसंग	कुसुम वार्ष्णेय	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
62	समकालीन हिन्दी उपन्यासः समय से	विजय लक्ष्मी	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006

	साक्षात्कार			
63	हिन्दी उपन्यास और	वीनू भल्ला	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
64	हिन्दी कहानी: प्रक्रिया और पाठ	सुरेन्द्र चौधरी	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
65	हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना	उषा यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
66	नई कहानी और अमरकान्त	निर्मल सिंह	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
67	स्त्री चिन्तन की चुनौतिया	रेखा कस्तवार	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
68	स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन	मेरी वोल्स्तनक्राफ्ट (अनु. मीनाक्षी)	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
69	स्त्रियों की पराधीनता	जॉन स्टुअर्ट मिल (अनु. प्रगति सक्सेना)	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
70	बधिया स्त्री	जर्मेन ग्रीयन (अनु. मधु वी. जोशी)	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
71	न्याय क्षेत्रे अन्याय क्षेत्रे	अरविन्द जैन	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
72	स्त्रीत्त्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य	क्षमा शर्मा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
73	21वीं सदी की ओर	सुमन कृष्णकांत	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
74	दाम्पत्य विज्ञान	डॉ. यतीश अग्रवाल	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
75	नारी विज्ञान	डॉ. यतीश अग्रवाल	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
76	स्वातंन्योत्तर हिन्दी उपन्यास	डॉ. यतीश अग्रवाल	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा	2005
77	औरत के लिए औरत	नासिरा शर्मा	सामयिक प्रकाशन,	2005

			दिल्ली	
78	हम सभ्य औरतें	मनीषा	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	2005
79	हिन्दी गद्यः प्रकृति और रचना सौन्दर्य	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2005
80	यौन दासियाँः एशिया का सैक्स बाजार	लुड्स ब्राउन (अनु. कल्पना शर्मा)	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
81	स्त्री–पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास	मन्मथनाथ गुप्त	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
82	पिछले पन्ने की औरतें	शरद सिंह	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	2005
83	साहित्य का मूल्यांकन	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	2005
84	उपनिवेश में स्त्री	प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2004
85	समकालीन साहित्य चिंतन	डॉ. रामदरश मिश्र व महीप सिंह	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	2004
86	इस्मत चुगताई टेढी लकीर	इरफान	राजकमल प्रकाशन पेपर बैक्स में, नई दिल्ली	2004
87	खून की छोटे इतिहास के पनों पर	भगवत शरण उपाध्याय	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2004
88	बयार उनकी मुट्ठी में	चित्रा मुद्गल	कल्याणी शिक्षा परिषद्	2004
89	हिन्दी उपन्यासः युग चेतना और पाठकीय संवेदना	डॉ. मुकुन्द द्विवेदी	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2003
90	स्त्री–पर्व	महाश्वेता देवी (अनु. सुशीला गुप्ता)	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2003
91	कार्यशील महिलाएँ एवं सामाजिक परिवर्तन	मंजु जैन, प्रिंटवेल	जयपुर प्रकाशन, जयपुर	2002
92	हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव	भारतभूषण अग्रवाल	किताब घर, नई दिल्ली	2002

93	उपन्यास की शर्त	जगदीश नारायण श्रीवास्तव	किताब घर, नई दिल्ली	2002
94	समकालीन हिन्दी उपन्यास समय से साक्षात्कार	विजय लक्ष्मी	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2002
95	स्त्री परम्परा और आधुनिकता	राजकिशोर	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2002
96	स्त्री संघर्ष का इतिहास 1800–1900	राधाकुमार	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2002
97	हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना	उषा यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	2001
98	औरतः अस्तित्व और अस्मिता	अरविन्द जैन	सारांश प्रकाशन, दिल्ली	2000
99	आधुनिकता के पहलू	डॉ. विपिन कुमार अग्रवाल	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2000
100	सृजन के परिवेश	डॉ. विपिन कुमार अग्रवाल	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	2000
101	स्त्री–पुरूष कुछ पुनर्विचार	राजकिशोर	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2002
102	हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास	हजारी प्रसाद द्विवेदी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1999
103	स्त्री उपेक्षिता	प्रभा खेतान	हिन्दी पॉकेट, दिल्ली	1998
104	नारी प्रश्न	सरला माहेश्वरी	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1998
105	आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां	डॉ. नामवर सिंह	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	1998
106	हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	डॉ. लालसाहब सिंह	नमन प्रकाशन, नई दिल्ले	1997
107	हिन्दी साहित्य का इतिहास	विजेन्द्र स्नातक	साहित्य अकादमी, दिल्ली	1994
108	समकालीन हिन्दी	डॉ. ज्ञानवती	हिन्दी बुकसेन्टर	1994

	कहानीः यथार्थ के विभिन्न आयाम	अरोडा		
109	हिन्दी साहित्य की भूमिका	हजारी प्रसाद द्विवेदी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1994
110	हिन्दी उपन्यास साहित्य में आदर्शवाद	डॉ. सर्वजीत राजा	लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद	1992
111	हिन्दी उपन्यास में रूढ़ीमुक्त नारी	डॉ. राजरानी शर्मा	साहित्य मण्डल, दिल्ली	1989
112	हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियां	डॉ. शशिभूषण सिंघल	विनोद पुस्तक, मन्दिर	1988
113	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा	डॉ. नीलम गोयल	गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर	1987
114	हिन्दी उपन्यास : प्रेम और जीवन	शान्ति भारद्वाज	सुशील प्रकाशन, अजमरे	1983
115	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा	हेतु भारद्वाज	पंचशील प्रकाशन, जयपुर	1983
116	आधुनिकता के संन्दर्भ में हिन्दी कहानी	डॉ. नरेन्द्र मोहन	जयश्री प्रकाशन, दिल्ली	1987
117	हिन्दी उपन्यास : बदलते संद्र्भ	डॉ. शशिभूषण सिघंल	प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली	1979
118	उपन्यास स्थिति और गति	चन्द्रकांत वाण्डिवदेकर	पूर्णो प्रकाशन	1977
119	हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियां	डॉ. लक्ष्मी नागर वार्ष्णेय	राधाकृष्ण प्रकाशन, आगरा	1976
120	हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना	डॉ. कुवरपाल सिंह	पाण्डुलिपी प्रकाशन, दिल्ली	1976
121	कामकाजी भारतीय नारी	डॉ. प्रमिला कपूर	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली	1976
122	उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा	डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1976
123	आधुनिक हिन्दी उपन्यास	नरेन्द्र मोहन	मैकमिलन कम्पनी, दिल्ली	1975

124	औरत : कल, आज और कल	आशारानी बोहरा	सामाजिक प्रकाशन, दिल्ली	1974
125	नारी की भूमिकाएँ	सुशीला मित्तल	अनुपमा प्रकाशन, दिल्ली	1974
126	हिन्दी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ. रमेश तिवारी	रचना प्रकाशन, इलाहबाद	1972
127	'मेध' आधुनिक बोध और आधुनिकीकरण	डॉ. रमेश कुन्तल	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1969
128	हिन्दी कहानीः एक अन्तरंग परिचय	उपेन्द्रनाथ अश्क	नीलम प्रकाशन, दिल्ली	1966
129	हिन्दी उपन्यास : पहचान और परख	डॉ. इन्द्रनाथ मदान	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1968
130	नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति	डॉ. देवशंकर अवस्थी	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1966
131	हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास	डॉ. सुरेश सिन्हा	अशोक प्रकाशन, दिल्ली	1965
132	स्वातंन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास	डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	1965
133	अत्याधुनिक हिन्दी साहित्यक	डॉ. कुमार विमल	पराग प्रकाशन, पटना	1965
134	हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचना	डॉ. चण्डी प्रकाश	अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर	192
135	हिन्दी उपन्यास : यात्रा गाथा	डॉ. शशि भूषण सिंघल एवं ऋषभ जैन	संतति प्रकाशन, दिल्ली	1964
136	हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण	महेन्द्र चौधरी	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1962
137	हिन्दी उपन्यास	डॉ. सुषमा धवन	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1961

सहायक पत्र–पत्रिकाएँ

क्र.स.	सहायक पत्र पत्रिकाएँ	संपादक	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष
1	आलोचना	नामवर सिंह	नई दिल्ली	2004
2	हंस	राजेन्द्र यादव	नई दिल्ली	2008
3	कथन	रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय	नई दिल्ली	2008
4	कथादेश	हरिनारायण	दिल्ली	2008
5	मधुमती	वेदव्यास	उदयपुर	2003
6	इंडिया टुडे	प्रभु चावला	दिल्ली	2008
7	आउट लुक	नीलाभ मिश्र	नई दिल्ली	2008
8	आजकल	योगेन्द्र दत्त शर्मा	नई दिल्ली	2007
9	नया ज्ञानोदय	रवीन्द्र कालिया	नई दिल्ली	2008
10	भाषा	जगदीश चतुर्वेदी	दिल्ली	1982
11	समय माजरा	हेतु भारद्वाज, गोविन्द माथुर	जयपुर	2006
12	कुरुक्षेत्र	स्नेह राय	दिल्ली	
13	साहित्य अमृत	त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी	दिल्ली	2008

शब्द–कोश

क्र.स.	शब्द–कोश	संपादक	प्रकाशक	प्र.स.
1	वृहद् हिन्दी कोश	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञान मण्डल प्रकाशन वाराणसी	
2	समान्तर कोश	अरविन्द कुमार	नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली	
3	हिन्दी साहित्य कोशः भाग 1	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञान मण्डल प्रकाशन वाराणसी	2020
4	हिन्दी साहित्य कोशः भाग 2	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञान मण्डल प्रकाशन वाराणसी	2020

प्रस्तावित शोध रूप रेखा अनुमोदित

11-5-15

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर :

व्याख्याता : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

शोध छात्रा के हस्ताक्षर

दिनांक : 11-5-15

शोध कार्य की सम्भावित अवधिः

1. प्रस्तावित शोध कार्य हेतु प्रथम वर्ष में संबंधित शोध सदंर्भ सूचीकरण, सर्वेक्षण एवं एतद् संबंधित पुस्तकों व शोध पत्रों का सकंलन, अवलोकन किया जाना प्रस्तावित है।
2. दूसरे वर्ष में शोध सामग्री का अध्ययन करते हुए बिन्दुवार लेखन किया जाना प्रस्तावित है। शोध छात्र अध्ययन के बीच ही यह अनुभव कर सकेगा कि शोध कार्य के लिए और कितने समय की आवश्यकता होगी।
3. तृतीय वर्ष में लेखन कार्य पूर्ण कर समापन का कार्य किया जा सकेगा, इस तरह कुल तीन वर्षो में शोध कार्य पूर्ण किया जा सकेगा।

संभवतः

उपर्युक्त शोध कार्य की अवधि प्रस्तावित है।

APPENDIX-VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of **Km. BHARTI** the on the above subject if she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so fir in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have............03................(give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ....04.................. (give the serial numbers)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

....
11-5-15

व्याख्याता : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Km.......BHARTI.......... for research work if she id registered for Ph.D.

....
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Signature of the Principal/ Director of the Institutuin with date

....
12-5-15

Signature do the Head, Department with date

अध्यक्ष : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX - IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) MISS BHARTI

   (In Hindi) सुश्री भारती

2. Title of the Research Work :

   (In English) WOMEN'S CONSCIOUSNESS IN THE NARRATIVE LITERATURE OF CHITRA MUDGAL

   (In Hindi) चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में स्त्री चेतना

3. Location

   a. Institution/Department where the work is to be done

   b. Geographical area of Investigation, if any.

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7. Major Hypothesis, if any.
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

भारती 11-5-15
Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

Name and Signature of supervisor with date & seal. [signature] 11-5-15
(डॉ. राजेन्द्र कुमार शर्मा)
व्याख्याता : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

APPENDIX-VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of **Km. BHARTI** the on the above subject if she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so fir in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have.........03.........(give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ....04.......... (give the serial numbers)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

....

Signature of the Supervisor with date

व्याख्याता : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Certified that the available facilities will be extended to Km.........BHARTI........ for research work if she id registered for Ph.D.

....

Signature of the Principal/ Director of the Institutuin with date

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

.........29.7.15.........

Signature do the Head, Department with date

अध्यक्ष : हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर